Volume : 4 | Issue : 9 | Sept 2015 • ISSN No 2277 - 8179

Research Paper

JOURNALISM

KEYWORDS : सोशल मीडिया, मूल्यपरक शिक्षा, अवसर एवं चुनौतियां।

सोशल मीडिया में मूल्यपरक शिक्षा : अवसर और चुनौतियां

Dr. SUBODH KUMAR — सहआचार्य एवं संयोजक पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, वीएमओयू, कोटा, (राज.)

ABSTRACT

नवाचारों का दौर है। सोशल मीडिया पर लोगों का जमावाड़ा तेजी से बढ़ रहा है। सोशल मीडिया की बढ़ती लोकप्रियता ने इस माध्यम को जनसंपर्क और विज्ञापन का उपकरण बना दिया है। आंदोलनों के मंच के नाम से संबोधित किया जाने वाला सोशल मीडिया आज ऑनलाइन बाजार में तब्दील होता जा रहा है। लोग इसे व्यापारिक और व्यावसायिक उपकरण के तौर पर तो खूब आजमा रहे हैं पर इसके जरिए सामाजिक ताने-बाने को संजोने एवं संवारने का प्रयास अभी कम ही नजर आ रहा है। इस क्षेत्र में सोशल मीडिया के जरिए संचार की अपार संभावनाएं नजर आ रही हैं। आज प्रत्येक समाजशास्त्री का यह कहना है कि समाज में अमानवीय व्यवहारों से समाज असंतुलित हो रहा है। उदाहरणार्थ विश्व में बढ़ते अपराध और हिंसक घटाएं साथ ही साथ आतंकवाद सभी मानव के अमानवीय व्यवहार का परिणाम हैं। इसकी सबसे बड़ी वजह मानव में सामाजिक एवं सांस्कारिक मूल्यों की कमी है। वर्तमान के सबसे बड़े माध्यम सोशल मीडिया के जरिए यदि मूल्यपरक शिक्षा का प्रचार-प्रसार किया जाए तो लोगों को जीव चेतना से मानव चेतना में प्रवेश कराने का प्रयास किया जा सकता है। प्रस्तुत शोध पत्र में सोशल मीडिया के द्वारा मूल्यपरक शिक्षा के प्रचार-प्रसार के अवसरों और चुनौतियों के बारे में अध्ययन किया गया है विमर्श के उपरांत निकले निष्कर्ष सोशल मीडिया में मूल्य परक शिक्षा के अनेक अवसरों के सकारात्मक नजरिए के साथ ही साथ गुणवत्तापरक डिजिटल सामग्री के निर्माण और सोशल मीडिया में विज्ञापनों की तरह का स्थान बिना आर्थिक शुल्क के मिलना सम्बंधित चुनौतियों को इंगित करते हैं।

की-वर्ड्स सोशल मीडिया, मूल्यपरक शिक्षा, अवसर एवं चुनौतियां।

भूमिका

जीव चेतना से मानव चेतना में प्रवेश करने के लिए व्यक्ति को खुद के व्यक्तित्व में मूल्यों का समावेश करना होता है। व्यक्ति में संस्कारों के विकास के उपरांत ही मानवीय व्यवहार प्रकट होता है। वर्तमान में यदि कोई सबसे बड़ा भय है तो वह मानव के अमानवीय व्यवहार का है क्योंकि यदि आज समाज में कोई असंतुलन पैदा हो रहा है तो वह मानव के अमानवीय व्यवहार के द्वारा ही हो रहा है। इस व्यवहार को संतुलित करने के लिए मूल्यपरक शिक्षा की महती आवश्यकता नजर आ रही है यानी ऐसी शिक्षा जिसमें संस्कारों का संप्रेषण किया जाए। वैश्वीकरण के दौर में संयुक्त परिवार टूट कर छोटे-छोटे परिवारों में तब्दील हो गए हैं। महंगाई के दौर में पति-पत्नी दोनों ही काम करके घर के खर्च को चला पा रहे हैं। दौड़-भाग भरी जीवन शैली में बच्चों के लिए समय निकला एक मुश्किल भरा कार्य हो गया है जिसका विपरीत प्रभाव बच्चों पर पड़ रहा है और उनमें संस्कारों की जो शिक्षा विकसित होनी थी उसका आभाव सा होता जा रहा है। शिक्षण संस्थान मैकाले की शिक्षा नीति के ढर्रे पर ही काम कर रहे हैं शिक्षा प्रणाली में आजादी के उन्सठ साल के बाद भी मूल्यपरक शिक्षा को स्थान नहीं मिल पा रहा है, साथ ही साथ जनमाध्यमों के द्वारा परोसी जा रही सामग्री जो अश्लीलता और रसूख से परिपूर्ण बच्चों की मनोवृति पर गहरी छाप स्थापित कर रही है ये स्थितयां बच्चों में अश्लीलता और हिंसक व्यवहार को बढ़ा रही हैं यही कारण है कि आज समाज में मानव का अमानवीय व्यवहार दिन प्रति दिन बढ़ता जा रहा है। आज सूचना संचार तकनीक आम लोगों की पहुंच का हिस्सा हो गई है और खास कर सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर लोगों की बड़ी संख्या नजर आ रही है इसमें में भी खास बात यह है कि सोशल मीडिया यूजर्स में युवा प्रयोगकर्ताओं की तादात लगभग सत्तर प्रतिशत के आस-पास है। इस नजरिए से सोशल मीडिया के जरिए मूल्यपरक शिक्षा के प्रचार-प्रसार एक सकारात्मक पथ नजर आ रहा है। बस देरी है पहल करने की।

सोशल मीडिया

तकनीकी नवाचारों का एक नायाब नमूना जिसे सोशल मीडिया कहते हैं यह सोशल नेटवर्किंग साइट्स का समूह है जो लोगों को ऑनलाइन विचार प्रेषित करने का मंच प्रदान करता है। इसके द्वारा आप टेक्स्ट, ऑडियो और वीडियो तीनों ही प्रकार की सामग्री को प्रेषित कर सकते हैं। इसके लिए आपको सोशल मीडिया साइट्स पर एकाउंट बनाना होगा। एकाउंट बनाने के लिए आपके पास किसी भी ई-मेल सर्विस प्रदान करने वाली वेबसाइट जैसे जीमेल आदि का ई-मेल एकाउंट होना चाहिए जिसे आप सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर रजिस्टर कर सोशल मीडिया एकाउंट बना सकते हैं। आज विश्व की हजारों किलोमीटर्स में फैली आबादी एक क्लिक से एक दूसरे के आमने-सामने आ जाती है और व्यक्तिगत व सामूहिक दोनों ही प्रकार से अपने विचारों को व्यक्त कर पाती है। सूचना प्रौद्योगिकी ने सभी सीमाएं लांघ कर अपने को विश्व पटल पर सर्वोत्तम स्थान प्रदान करा दिया है। वर्तमान में समाज के छोटे से छोटे मुद्दों को विश्व स्तर का मंच प्राप्त है। सोशल मीडिया ने लोगों की दिनचर्या में अपना स्थान बना लिया है , लोग इसे जीवन का अहम हिस्सा मानने लगे हैं। यह उन्हें लोगों से जोड़ कर विश्व स्तर पर पहचान देती है। यह माध्यम आज के युग का सबसे लोकप्रिय माध्यम बनता जा रहा है। वेब जगत में सोशल मीडिया ने अपनी अलग पहचान बना ली है। आज बहुत से लोग सिर्फ सोशल मीडिया से जुड़ने के लिए ही वेब की दुनिया में प्रवेश करते हैं। अब तो ऐसा भी कहा जाने लगा है कि सोशल मीडिया के बिना वेब अधूरा है। सोशल नेटवर्किंग प्रदान करने में ङ्क सबुक, ट्विटर, गूगल प्लस, ऑरकुट, लिंक्ड-इन तथा यू-ट्यूब आदि नेटवर्किंग साइट्स मौजूद हैं।

मूल्यपरक शिक्षा

मूल्यपरक शिक्षा से अभिप्राय संस्कारों की शिक्षा है जो मानव में सामाजिक और सांस्कृतिक भाव को विकसित करती है, जिससे मानव को नैतिकता से अवगत कराया जा सके। इस शिक्षा के जरिए जीव के मानवीय व्यवहार को तरासा जाता है जिससे वह समाज में अनुकूल व्यवहार कर सके। साथ ही साथ नैतिक और अनैतिक क्रियाकलापों में भेद समझ सके। सेवार्थ और धर्मार्थ भाव को विकसित करने की प्रक्रिया मूल्यपरक शिक्षा कहलाती है जो जीव में मानवीय चेतना का विकास करती है। मूल्य वे मूल्य हैं जो सामाजिक व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने के लिए नैतिक सीमाओं का निर्धारण करते हैं जो सामाजिक ताने-बाने को अहिंसा और शांति के पथ की ओर अग्रसर करता है।

सोशल मीडिया में मूल्यपरक शिक्षा

अनेकों समाजशास्त्रियों का यह मत रहा है कि किसी देश या समाज का समावेशी विकास तभी संभव है जब उस देश या समाज के व्यक्तियों में नैतिकता, संस्कार, प्रकृतिप्रेम और सांस्कृतिक सोहार्द का पुट हो। यह तभी संभव हो सकता है जब उस देश या समाज में मानवमूल्य समाहित हों। वर्तमान परिदृश्य में वैश्वीकरण की वजह से लोगों का पलायन बढ़ा है। रोजगार के अवसरों की तलाश में लोग एक स्थान से दूसरे स्थान पर पलायन कर रहे हैं इससे संयुक्त परिवार का चलन धीरे-धीरे खत्म सा होने लगा है। इस तरह के पारिवारिक कटाव से नई पीढ़ी में सामाजिक मूल्यों की कमी महसूस की जा रही है। यही कारण है कि समाज को मानव के अमानवीय व्यवहार से दो-चार होना पड़ रहा है। शिक्षा नीति में सिर्ङ्क रोजगार परक शिक्षा के विकास पर जोर दिया जा रहा है मूल्यपरक शिक्षा के प्रसार के लिए कोई ठोस कदम नहीं उठाए जा रहे हैं। तभी बहुत से उच्च शिक्षित लोग भी अमानवीय व्यवहार प्रकट कर समाज में असंतुलन पैदा कर रहे हैं। उदहारणार्थ आतंकवादी याकूब मेनन पेशे से सीए था और अफजल गुरू डॉक्टर ऐसे ही बहुत से उदाहरण हैं जो इस बात को सिद्ध करते हैं कि पढ़े लिखे लोग भी अमानवीय व्यवहार प्रकट कर रहे हैं। इससे यह बात साफ़ होती है कि रोजगारपरक शिक्षा में मानवीय मूल्यों का भी समावेश जरूरी है। जो साक्षर को शिक्षित की श्रेणी में ला सके साथ ही साथ व्यवहार में नैतिकता को विकसित कर सके। वर्तमान में सोशल मीडिया के द्वारा यह कार्य आसानी से किया जा सकता है। क्योंकि आज के परिवेश में सोशल मीडिया की पहुंच का दायरा अत्याधिक बढ़ गया है साथ ही लोग सोशल मीडिया का प्रयोग दैनिक क्रिया के रूप के करने लगे हैं।

सोशल मीडिया में मूल्यपरक शिक्षा : अवसर

सोशल मीडिया में मूल्यपरक शिक्षा के विकास के लिए अनेक अवसर मौजूद हैं क्योंकि वर्तमान में सोशल मीडिया की पहुंच विश्व के हर कोने में है। यदि भारत की बात करें तो ३६ करोड़* इन्टरनेट यूजर्स हैं जो देश की आबादी का लगभग ३० फीसदी है और इसमें भी युवाओं जिनको मूल्यपरक शिक्षा की महती आवश्यकता है, ७० से ८० फीसदी के आस-पास हैं। साथ ही यदि सोशल मीडिया की संचार क्षमता की चर्चा करें तो यह माध्यम टेक्स्ट, ऑडियो एवं वीडियो तीनों ही तरह की संचार व्यवस्था कायम कर सकता है। सोशल मीडिया की क्षणिक प्रतिपुष्टि (खर्पीरपीं ऋशवलरलङ्ग) की क्षमता किसी भी प्रकार की सामग्री पर तुरंत प्रतिक्रिया प्राप्त कर लेती है। साथ ही साथ किसी भी सामग्री पर पसंद, टिप्पणी एवं शेयर करने की एप्लीकेशन सामग्री को चन्द मिनटों में बड़े दायरे में फैला देती है जिससे कोई भी सूचना कम से कम समय में पूरे विश्व में ङ्कै ल जाती है। इस तरह की खूबियां सोशल मीडिया को मूल्यपरक शिक्षा के प्रचार-प्रसार के लिए अनेकों अवसर प्रदान करती हैं। वर्तमान में जो संस्थान मूल्यपरक शिक्षा के प्रसार के लिए कार्य कर रहे हैं उन्हें फेसबुक, लिंक्डइन, गूगलप्लस और यूट्यूब पर छोटी-छोटी वीडियो क्लिपिंग का प्रसारण कर एक शुरुआत कर सकते हैं। साथ ही टेक्स्ट और ऑडियो सन्देश भी प्रसारित कर सकते हैं। यदि बात एप्स बेस्ड सोशल नेटवर्किंग की करें तो वाट्स एप और वीचैट जैसे प्लेटङ्क ॉर्म मूल्यपरक शिक्षा के लिए मील का पत्थर साबित हो सकते हैं। सरकार एवं समाजसेवी संगठन मूल्यपरक शिक्षा के व्यापक विकास के लिए यदि सोशल मीडिया का प्रयोग करें तो इस माध्यम में अनेक अवसर नजर आते हैं।

सोशल मीडिया में मूल्यपरक शिक्षा : चुनौतियां

सोशल मीडिया को सोशल एक्टिविस्ट फोरम के नाम से भी संबोधित किया जाता है। सोशल मीडिया की विश्वव्यापी पहुंच इस मीडिया के जिरए मूल्यपरक शिक्षा के विकास के अनेक अवसरों को प्रदर्शित करती है। तो साथ ही इन अवसरों को प्राप्त करने के लिए अनेक चुनौतियां को भी दृष्टिगोचर करती हैं। इन चुनौतियों में मूल्यपरक शिक्षा में गुणवत्तापरक डिजिटल सामग्री की है जो लोगों को आसानी से जीव चेतना से मानव चेतना में ला सके। साथ ही इस क्षेत्र में कार्य कर रहे संस्थानों को तकनीक से जोड़ना भी एक चुनौती है। सोशल मीडिया पर मूल्यपरक शिक्षा के विकास के लिए विज्ञापन जैसा स्थान बिना किसी आर्थिक शुल्क के मिलना जिससे कि सामग्री को प्रत्येक यूजर्स तक पहुंचाया जा सके एक बड़ी चुनौती है।

समाज निहितार्थ

वर्तमान परिदृश्य में सोशल मीडिया मानवीय मूल्यों को आम व्यक्ति के जीवन में उतारने का सबसे श्रेष्ठ माध्यम सिद्ध हो सकता है। जिस तरह से सोशल मीडिया की पहुंच दिन प्रति दिन बढ़ती जा रही है और सोशल मीडिया लोगों की जीवन शैली का अंग होती जा रही है। ऐसे में सोशल मीडिया के जरिए मूल्यपरक शिक्षा के प्रचार-प्रसार के अनेक अवसर नजर आ रहे हैं। सोशल मीडिया के जरिए यदि पहल की जाए तो लोगों के व्यवहार में नैतिक मूल्यों का समावेश किया जा सकता है। साथ ही लोगों में विकसित हो रही यूज एंड थ्रो जैसी मानसिकता को बदल जा सकता है साथ ही साथ सेवार्थ भाव का भी विकास किया जा सकता है। भाग दौड़ भरी जीवन शैली की वजह से जो तनाव लोगों में बढ़ रहा है जससे वे हिंसात्मक व्यवहार कर रहे हैं इस तरह के व्यवहार को सोशल मीडिया के जरिए प्रचारित सामग्री कम कर सकती है। जीव को मानव चेतना में लाने और उसमें मानवीय मूल्यों को समावेशित करने में सोशल मीडिया एक बेहतर उकरण के तौर पर कार्य कर सकता है।

REFERENCE

पुस्तकें 1. Saxena, mbrish (2012). Issue of communication development and society. Gera, Gagan (Eds.) Social Media Networking and concept of International Citizenship (P.P.163-167). New Delhi : Kanishka Publisher, Distributors. | 2. Mathur, K, Prasant (2012). Social Media and Networking Concept, trend and dimensions. New Delhi : Kanishka Publisher, Distributors. | 3. Gupta, Om Jasra jay S. (2002). Information Technology in Journalism. New Delhi : Kanishka Publishers, Distributors. | 4. चतुर्वेदी, जगदीश्वर (2013). मीडिया समग्र (भाग-३) ज्ञान-क्रान्ति और साइबर संस्कृति. दिल्ली: स्वराज प्रकाशन 5. जोशी, शालनी, जोशी, शिवप्रशाद (2012). वेब पत्रकारिता नया मीडिया नये रूझान. नई दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड 6. शर्मा, विजय (2011). आधुनिक पत्रकारिता प्रभाव एवं कार्य. जयपुर: इशिका पब्लिशिंग हाउस 7. सिंह, सुरजीत (2012). मीडिया अचीवर्स. जयपुर: हार्सबैक पब्लिकेशन 8. कुमार, राकेश (2009). इलेक्ट्रानिक मीडिया एवं साइबर संचार पत्रकारिता. नई दिल्ली: श्री नटराज प्रकाशन 9. डॉ. सोनी, सुधीर (2009). नवीन मीडिया प्रविधियां . जयपुर: बुक एनक्लेव 10. कुमार, सुरेश (2004). इंटरनेट पत्रकारिता. नई दिल्ली: तक्षशिला प्रकाशन शोध पत्र 1. Gupta, Komal.(Oct-Dec., 2013). ICT Vision 2020: Milestone. Communication Today, 44-53 | 2. Mathur, nubhav.(Oct-Dec., 2013). Mobile Comes to India. Communication Today. | 3. Dr. Nayak, S. Chandra.(Oct-Dec., 2013). Social Media: Connecting One and ll. Communication Today, 66-74 | 4. Pankaj Dr., charya, kunjan.(Oct-Dec., 2013). Social Networking: Youth in New Millennium. Communication Today, 75-86. | वेबसाइट्स 1. https://www.google.co.in/search?q=internet+users+in+india+2015biw=1366bih=657tbm=ischtbo=usource=univsa=Xved=0CCQQsRqFQoTCPr4joaPnscCFUwjjgodEGcIwQimgrc=76GbbzwHCjpD8M%3.* (7/8/2015 . 03:19 PM²) | 2. https://en.wikipedia.org/wiki/Valuesšeducation. (11/8/2015 . 05:10 PM²) | 3. http://webtrends.about.com/od/web20/a/social-media.htm. (15/8/2015 . 10:40 PM²) |